जबलपुर एक्सप्रेस
लाइलाज बीमारी... 2
राज एक्सप्रेस
जबलपुर गुरुवार, 31 मई 2012
www.rajexpress.in

'एटलस ऑफ उड डिकेयिंग फंजाई ऑफ सेन्ट्रल इंडिया' का विमोचन

जबलपुर (आरएनएन)। काष्ठ एक बहुपयोगी प्राकृतिक संसाधन है। काष्ठ की गुणवत्ता विभिन्न प्रकार के फफूंदों के प्रभाव से काष्ठगारों में घट जाती है जो बड़े नुकसान की वजह बनीत है। इस प्रकार के फफूंदों को काष्ठ विनाशी फफूंद कहते हैं और विश्वभर में इस तरह की फफूंदों से काष्ठ में काफी नुकसान होता आया है। इस विषय पर लिखी गई पुस्तक 'एटलस ऑफ उड डिकेयिंग फंजाई ऑफ सेन्ट्रल इंडिया ' इस दिशा में होने वाले नुकसान को कम करने और खत्म करने में उपयोगी साबित होगी ऐसा मेरा विश्वास है। उक्त बातें डॉ. की के बहुगुणा महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने पुस्तक का विमोचन करते हुए कहीं।

सेवा निवृत्त वैज्ञानिक डॉ. सीके तिवारी उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान जबलपुर एवं अन्य सहयोगी के द्वारा रचित की गई इस पुस्तक में मध्य भारत के चार राज्यों मप्र छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं महाराष्ट्र में पाई जाने वाली फफूंदों की 191 किस्में का विस्तृत वर्णन किया गया है। पुस्त के विमोचन अवसर वन अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य कर रहे वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं वन विभाग के उच्च पदस्थ अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित हुए।

Book on 'Atlas of wood decaying fungi' released at TFRI

■ Staff Reporter

WOOD is an important and valuable natural resource. The quality of wood often deteriorates due to decay caused by various types of fungi in timber depots and as well as in natural forests.

These fungi are collectively called wood decaying fungi. Incurring huge economic loss due to wood decay has been widely acknowledge but there is no proper documentation and identification as to what are all these fungi and extent of loss of nature.

A book titled 'Atlas of wood decaying fungi of Central India', authored by Dr C K Tiwari, Dr U Prakasham, was published by Tropical Forest Research Institute, Jabalpur (MP). It is a comprehensive treatise enlisting 191 species of fungi with colour full illustrations of their fruiting bodies as well as microscopic taxonomic details taken from the field and critically analysed in the laboratory. These details would be handy for identification of specific wood decaying fungi in four states of Central India i.e. MP, Chhattisgarh, Odisha and Maharashtra. The book has been released in the inaugural session of RPC, 2013 meeting by Dr V K Bahuguna, IFS, Director General, ICRE, Dehradun, on May, 30.

Dr Bahuguna and other guests releasing the book.